धरोहर के रूप में मौजूद हैं पारंपरिक कला : साहू

रांची विवि के टीआरएल में व्याख्यानमाला आयोजित

संवाददाता

रांची। पारंपरिक कला हमारे धरोहर के रुप में मौजूद हैं। इस धरोहर को सहेजने व संरक्षित किये बगैर हम विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं। उक्त बातें जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ त्रिवेणी नाथ साहु ने कही। डॉ साहु इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर दी आर्टस एवं रांची विश्वविद्यालय के तत्वावधान में झारखंड की पारंपरिक कला विषय पर डाटा प्रोसेसिंग सेल बिल्डिंग मोराबादी में आयोजित व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रुप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि जहां आकर्षण नहीं वहां लोग आकिर्षत नहीं होते। हमारे झारखंड प्रदेश में ऐसी अनेकों कलाएं विद्यमान हैं, जिससे आकिर्षत होकर लोग बरबस ही खींचे चले आते हैं। ऐसे में हमारी लुप्त होती कला को बचाना होगा। यह हम सबों का वह दायित्व है। उन्होंने कहा कि पूर्वजों की अनमोल तोहफा, विरासत को सहेज कर रखने की आवश्यकता है, ताकि आने वाली पीढी इसे जान व समझ सके। उन्होंने कहा कि उपयोगी कला हमारे जीवन को परिस्थिति के अनुकूल बनाता है। कला के माध्यम से हमारे अंदर आनन्द की प्राप्ति होती है। सौन्दर्य की खोज ही कला पक्ष की मजबूत कड़ी है। इस सौन्दर्य बोध के बगैर हमारा साहित्य भी अधूरा है। उन्होंने कहा कि झारखंड की धराधाम में अनेकों कलाएं छुपी पड़ी है। मिप्ती कला, बांस कला, ललित कला, पाक कला, हस्त कला, लोक चित्र कला, लकड़ी कला, नृत्य कला, संगीत कला जैसी कलाओं ने झारखंड की अलग पहचान दिलायी है। खासकर के नृत्य कला और संगीत कला ने झारखंड की पहचान विश्व पटल पर दी है। डॉ साहु ने झारखंड की पारंपरिक लोक कला पर अपना शोध व्याख्यान प्रस्तुत करते हुये कहा कि सत्यम शिवम और सुन्दरम के बगैर कला अधूरा है। उन्होंने पारंपरिक कला के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार पूर्वक अपनी बातें रखी।

व्याख्यानमाला की अध्यक्षता करते हुए जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ गिरिधारी राम गौंझू ने कहा कि कला मन की आत्मा है। यह मौखिक परम्परा के द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही है। उन्होंने कहा कि आज हमारी कई पारंपरिक कलाएं विलुप्ति के कगार पर है। ऐसे में इसे नये सौन्दर्य रुप देकर कैसे सुरक्षित व संगठित किया जाये। इस ओर पूरे समाज को चिंतन मनन करने की आवश्यकता है। व्याख्यानमाला में उपस्थित प्राध्यपकों एवं शोधार्थियों का स्वागत आईजीएनसीए के बच्चन कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन अंजनी कुमार सिंह ने किया। मौके पर मुख्य अतिथि के रुप में पद्मश्री मुकुंद नायक, डॉ कमल कुमार बोस, डॉ हरेन्द्र सिन्हा, सहायक प्राध्यापक बीरेन्द्र कुमार महतो, सुरेन्द्र सुरिन, सुबास साहु, अरुण आशीष तिग्गा, डॉ अर्चना कुमारी, योगेश प्रजापति, करम सिंह मुण्डा, लखीन्द्र मुण्डा, विजय कुमार साहु, आजाद कुमार वर्णवाल के अलावा कई शिक्षाविद उपस्थित थे।

Sat, 28 April 2018
www.readwhere.com/read/c/28235823

LECTURE ON ART OF JHARKHAND

A lecture was organised on the topic of traditional art of Jharkhand and it was delivered by HOD – Dept of Tribal Regional Language – RU, Dr. Triveni N Sahu. He discussed about the presence of various forms of arts which constitutes the culture of Jharkhand. He also pointed out on the people's attractions towards modernization overlooking what the nature has to offer. Present on the occasion was Padma Shri recipient Mukund Nayak.

The Pioneer-28-04-2018

झारखंड की पारंपरिक कला पर व्याख्यान, डॉ टीएन साहू ने कहा

कला है समुदाय की पहचान

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची क्षेत्रीय शाखा और रांची विवि के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को झारखंड की पारंपरिक कला पर व्याख्यान हुआ. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के मोरहाबादी स्थित कार्यालय में डॉ बच्चन कुमार ने कहा कि झारखंड की पारंपरिक कला का जड़ आदिवासी समुदाय है.

जनजातीय समुदाय की पीढ़ियों ने राज्य की संस्कृति को आकार दिया है. झारखंड की संस्कृति पर 30 आदिवासी समुदाय मुंडा, उरांव, असुर, संताल, बिरहोर आदि का प्रभाव है. जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा विभाग के डॉ टीएन साहू ने कला की परिभाषा और उसके विभिन्न पहलुओं को बताया. किसी भी समुदाय की पहचान उसकी कला से भी होती है. कला से किसी समुदाय विशेष के अध्ययन में भी सहायता मिलती है. उन्होंने झारखंड की मिट्टी कला और पारंपरिक वेशवूषा के बारे में विस्तार से जानकारी दी. बांस बनने वाली चीजों के बारे में भी बताया. डॉ गिरिधारी राम गोंझू ने कहा कि झारखंड की पुरानी वस्तुओं और कला से जुड़ी सामग्रियों का डॉक्यूमेंटेशन होना चाहिए. इन्हें संरक्षित करना बहुत जरूरी है क्योंकि ये कला लुप्त होती जा रही है. पुराने समय में महिलाएं जो आभूषण धारण करती थी उनका अपना महत्व है. ये आभूषण नुकीले भी होते थे ताकि जरूरत पड़ने पर महिलाएं उसे हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सके.

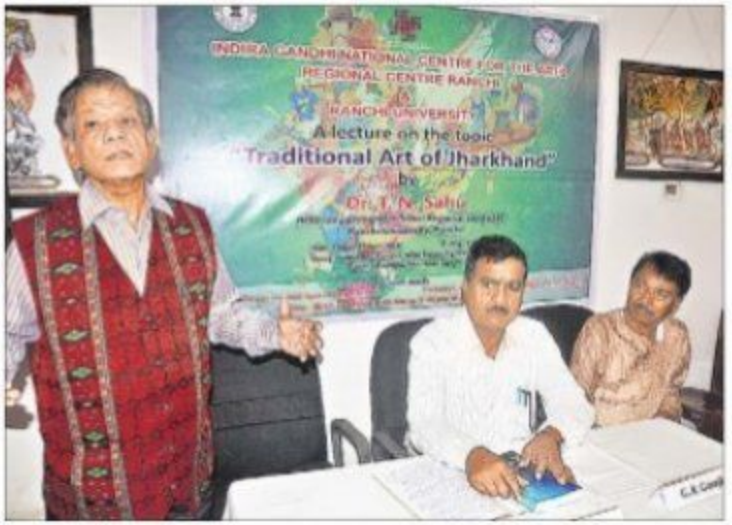

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के मोरहाबादी स्थित कार्यालय में विमर्श करते अतिथि.

THE TIMES OF INDIA

Ranchi University organises lecture on Jharkhand's traditional art

TNN | Apr 27, 2018, 05.15 PM IST

The Indira Gandhi National Centre for the Arts, Ranchi Regional Centre, in collaboration with Ranchi University, organised a lecture on the topic, 'The Traditional Art of Jharkhand', delivered by Dr TN Sahu, Head of the Department, Tribal Regional Languages. Dr Giridhari Ram Gaunjhu, eminent tribal Linguist was also present on the occasion. In his illustrative talk, Dr Sahu brought to light the techniques and importance of various traditional art forms of Jharkhand that include clay art, basketry, bamboo, metal jewellery and wood carving. Besides, he also mentioned many unknown facts including their place of origin, local name and their use in various areas. Dr Sahu further added that due to modernisation, their existence is at stake and some of them have disappeared from use.

'आदिवासियों से ही झारखंडी कला-संस्कृति की पहचान'

रांची | वरीय संवाददाता

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और रांची विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को आईजीएनपीए के क्षेत्रीय कार्यालय में 'झारखंड की पारंपरिक कला' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया। इसमें बुद्धिजीवियों ने कला-संस्कृति को बचाए रखने व उसे आगे बढ़ाने पर चर्चा की।

वक्ताओं ने बताया कि कैसे आज झारखंड की कला-संस्कृति पूरी दुनिया में सराही जा रही है। कार्यक्रम की अध्यक्षता जनजातीय भाषाविद् डॉ गिरिधारी राम गोंझू ने की। उन्होंने बताया कि यहां की पारंपरिक कला की जड़ आदिवासी समुदाय है। इस समुदाय ने राज्य की संस्कृति को पहचान दी है। झारखंड की संस्कृति पर असुर, संथाल, बंजारा, बिहोर, चेरो, गोंड, हो, खण्ड, लोहरा, माई पहरिया, मुंडा, ओरायन, कोल या कवार आदि जैसे 30 समूहों का प्रभाव है। उन्होंने पुराने दस्तावेज व

शुक्रवार को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और रांची विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित व्याख्यान में विचार रखते वक्ता और उपस्थित लोग।

चीजों को संरक्षित करने की जरूरत बतायी। कहा- गर इसे बचाकर रखा जाए तो आने वाली पीढ़ी को कई जानकारियां मिलेंगी। साथ ही, कला को लुप्त होने से बचाया जा सकेगा। जनजातीय क्षेत्रीय भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ टीएन साहू ने कहा कि किसी भी कला से उसके समुदाय को पहचानने व अध्ययन करने में आसानी होती है। उन्होंने यहां की मिटटी कला (मड आर्ट) और पारंपरिक वेषभूषा के बारे में बारीकी से बताया। बांस कला का जिक्र करते हुए कहा कि यह देश-विदेश में प्रसिद्ध हो रही है। इस मौके पर अंजनी कुमार सिन्हा, डॉ बच्चन कुमार आदि मौजूद थे।